ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 10, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 6.551

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

गांधी जी की बुनियादी शिक्षा: नयी शिक्षा नीति के संदर्भ में

Dr. Mahesh Chand Gothwal

Assistant Professor, Public Administration, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan, India

सार

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के समय गांधीजी ने सबसे पहले बुनियादी शिक्षा की कल्पना की थी। आज जिसे विश्वविद्यालय स्तर पर "फाउंडेशन कोर्स" कहा जाता है, उसकी पृष्ठभूमि में गांधी की बुनियादी यानी बेसिक शिक्षा ही तो थी। इस बुनियादी प्रशिक्षण और प्राथमिक स्तर की शिक्षा के दो स्तर थे- स्कूली बच्चे कक्षा-एक से ही तकली से सूत कातते थे; रूई से पौनी बनाते थे और सूत की गुड़िया बनाकर या तो खादी भंडारों को देते थे या बैठने के आसन, रुमाल, चादर आदि बनाते थे।

शिक्षा के बारे में गांधीजी का दृष्टिकोण वस्तुत: व्यावसायपरक था। उनका मत था कि भारत जैसे गरीब देश में शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ कुछ धनोपार्जन भी कर लेना चाहिए जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। इसी उद्देश्य को लेकर उन्होंने 'वर्धा शिक्षा योजना' बनायी थी। शिक्षा को लाभदायक एवं अल्पव्ययी करने की दृष्टि से सन् १९३६ ई. में उन्होंने 'भारतीय तालीम संघ' की स्थापना की ।

परिचय

महात्मा गांधी ने अपने शिक्षा संबंधी प्रयोगों को 'नयी तालीम' के अंतर्गत स्पष्ट किया है। प्रयोजनवादी, आदर्शवादी तथा प्रकृतिवादी होने के साथ-साथ गांधी द्वारा दी गयी शैक्षणिक संरचना में कई विचारों की एक साथ झलक मिलती है। जहाँ एक तरफ वो ये मानते थे कि शिक्षा के माध्यम से बालकों का विकास प्रकृति के निकट गांव में होनी चाहिए, वहीं उन्होंने वैज्ञानिकता और विकास की वैधानिकता तथा प्रोद्यौगिकी पर भी बल दिया। गाँधी को प्रोद्यौगिकी विरोधी के रूप में चित्रण किया जाता रहा है परन्तु वास्तविक रूप से वह आधुनिक दौर के अंध-प्रयोगों और विज्ञान के पागलपन के विरोधी थे। वो प्रकृति और समाज बीच बनती एक खाई को देख रहे थे। गांधी के शिक्षा सुझावों को मनुष्य और प्रकृति के मध्य एक सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास के रूप में देखा जा सकता है।[1,2,3]

गाँधी की नयी तालीम के संदर्भ में तुलनात्मक ढंग से अगर इस नीति की समीक्षा की जाए, तो यह एक प्रकार से पहले से चली आ रही शिक्षा नीतियों में एक अपडेट नोटिफिकेशन की तरह आया है। शिक्षा एवं शिक्षण संबंधी संरचना के अलावे इसमें ऐसा कुछ भी नया या रचनात्मक नहीं है जिसे पहले किसी भी शिक्षा नीति में प्रस्तावित न किया गया हो, हालाँकि नई शिक्षा नीति गांधी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा संबंधी विचारों तथा सुझावों की एक झलक जरूर प्रदर्शित करती है।

नई शिक्षा नीति 2020 के मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा वाले बिंदु सबसे अधिक चर्चा में रहे हैं। मातृभाषा, हिंदी एवं अंग्रेजी में अध्ययन-अध्यापन की बहस या शिक्षा नीतियों में इसका सुझाव नया नहीं है। ब्रिटिशकालीन शिक्षा नीतियों से लेकर गांधी तक मातृभाषा में शिक्षा देने की बात करते रहे हैं, लेकिन क्या गांधी द्वारा प्रस्तावित भाषायी संरचना को 2020 में NEP के माध्यम से देखा जा सकता है? शायद इसका जवाब होगा नहीं, क्योंकि गांधी ने स्पष्ट रूप से शिक्षा को गांव के निकट देखा था और उनकी कल्पना में इसे ही उत्तम प्रबंध माना था लेकिन आज NEP 2020 के समय में परिस्थिति वैसी नहीं रही।

आज़ादी के बाद विकास की एक सनक ने शिक्षा का व्यवसायीकरण और निजीकरण करने पर अधिक प्रयास किया। इन प्रयासों के कारण शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य भी जमीनी स्तर पर बदलते गए। यह बदलाव यहाँ तक पहुंचा कि आज विद्यालयों को उन्नत करने के लिए या योजना बनाने के लिए उनका वर्गीकरण अर्बन और रूरल क्षेत्र के साथ साथ 'निजी और सरकारी' आधार पर भी किया जाता है। संभव है कि यह वर्गीकरण विद्यालयों के विकास के नियतांक निर्धारित करने के लिए आवश्यक हों, परन्तु उसी समय यह एक आर्थिक-सामाजिक वर्गीकरण को भी दर्शाता है जहाँ आर्थिक रूप से कमजोर, आदिवासी, पिछड़े तथा ग्रामीण इलाकों के विद्यार्थी भारत में शिक्षा संबंधी प्रयोगों के आगे लाचार नज़र आते हैं। गांधी अपनी समझ को स्पष्ट रखते हैं कि मातृभाषा

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

के कारण विद्यार्थियों में अधिगम प्रक्रिया सुचारु रूप से संपन्न होगी। इधर के. कस्तूरीरंगन अपने एक बयान में स्पष्ट करते हैं कि मातृभाषा में शिक्षा को लेकर NEP 2020 द्वारा कोई दबाव नहीं बनाया जा रहा है।

यहाँ यह ध्यान देना जरूरी है कि मातृभाषा में शिक्षा को लेकर NEP 2020 में "जहाँ तक संभव हो" के रूप में लागू करने की बात कही गयी है। क्या यह 'संभव' भारत के निजी विद्यालयों के लिए संभव हो पाएगा? इसका कोई ठोस उत्तर नहीं मिल सकता है। वहीं दूसरी ओर समाज का एक तबका मातृभाषा के इतर अंग्रेजी पर ज्यादा बल दे रहा है क्योंकि आधुनिक भारत में वैश्वीकरण के बाद या उत्तर-औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी भाषा को एक स्टेटस सिम्बल के रूप में देखा जाता है एवं यह भाषा अर्बन स्कूल या निजी स्कूलों में अधिगम का भाषायी आधार बन गया है।[5,7,8] समाज एवं बाजार एवं इसकी प्रतियोगिता में बने रहने की जद्दोजहद ने सरस्वती शिशु विद्या मंदिर जैसे श्रृंखलाबद्ध संस्थानों को भी अपना पाठ्यक्रम धीरे-धीरे अंग्रेजी में रूपांतरित करने पर बाध्य कर दिया है। अब यहाँ सवाल यह है कि जब भविष्य में लक्ष्य प्राप्ति हेतु अंग्रेजी या हिंदी भाषा ही काम आने वाली है एवं उच्च अध्ययन में अधिकांश शिक्षण सामग्री इन्हीं भाषा में उपलब्ध हैं तो स्थानीय या मातृभाषा पर कोई क्यों बल दे, वह भी तब जब एक वर्ग शहर या निजी विद्यालयों में उसी उम्र में अंग्रेजी पढ़ रहा है जो उसे आगे ज्यादा काम आने वाली है। अर्थात यहाँ भाषा के वर्चस्व से लेकर अवसर तक की लड़ाई है। इस संघर्ष में एक वर्ग को स्वयं अंग्रेजी में ज्ञान अर्जित कर दूसरे वर्ग से स्थानीय भाषा को पढ़ कर संस्कृति तथा सभ्यता बचाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

इसके अलावा गांधी एवं NEP 2020 में क्राफ्ट-आधारित शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा पर भी आपसी तालमेल रखते हैं, परन्तु यहाँ भी एक आर्थिक वर्गीकरण की बड़ी झलक सामने आती है। NEP 2020 ने स्थानीय सहित अन्य क्राफ्ट आधारित शिक्षा एवं प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया है। यहाँ भी शिक्षा नीति गांधी के विचारो के साथ मेल खाती है। दोनों के अनुसार इस तरह के प्रशिक्षण से बालक-बालिकाएं अपने सामान्य कार्यों तथा समस्याओं का हल स्वयं कर पाएंगे। इसमें यह तो स्पष्ट है कि इस आधार पर निर्माणवादी परिपेक्ष्य पर ध्यान दिया जा रहा है लेकिन क्या ग्रामीण बनाम शहरी विद्यालयों तथा निजी बनाम सरकारी विद्यालयों में दिए जाने वाले प्रशिक्षणों का स्तर, प्रकृति एवं प्रक्रिया के अलावा संसाधनों का वितरण एवं उपयोग एक समान हो पाएगा?

सहायक प्रोफेसर ऋषभ कुमार मिश्र एवं रवनीत कौर द्वारा वर्धा स्थित आनंद निकेतन विद्यालय पर किये गये कई शोध एवं परियोजनाओं से हम यह जान सकते हैं कि गांधी के नयी तालीम के अनुसार चलने वाले विद्यालय कैसे आज संघर्षरत व उनकी शिक्षण प्रणाली कैसी है। इस विद्यालय में विद्यार्थी सैद्धांतिक के अपेक्षा प्रयोगात्मक शिक्षा के माध्यम से अधिगम करते हैं अर्थात गणित में गणना सीखने के लिए विद्यार्थी अपने शिक्षकों सहित खेत में जाते हैं जहाँ वे खेत की आकर एवं क्षेत्रफल के साथ-साथ खेती भी सीखते हैं। इसे सीखने के क्रम में विद्यार्थी मिट्टी के प्रकार एवं उपयोग भी सीख लेते हैं। खेत जाने के क्रम में भी मार्ग में आने वाले विभिन्न पेड़-पौधों पर भी चर्चा होती चली जा रही थी।

विचार-विमर्श

अभय बंग ने अपने विद्यालयी शिक्षा नयी तालीम प्रणाली के अंतर्गत प्राप्त की और वे अपने लेख 'कहाँ है वो शिक्षा का जादू भरा द्वीप?' में यह बताते हैं कि उनके विश्वविद्यालय में मिलने वाली कई प्रायोगिक ज्ञान को वे पहले ही व्यावहारिक तौर पर विद्यालय में ग्रहण कर चुके होते हैं। यह सब अंतरानुशासनिक अध्ययन की परिभाषा का अंग है जिसे नयी तालीम ने NEP 2020 से पहले ही प्रस्तावित किया था।

NEP 2020 अपने परिचय या प्रस्तावना में शिक्षा की एक आदर्श छवि को बनाने का प्रयास करता है। उसमें हर वो बात शामिल है जो एक विद्यार्थी को एक एडवांस या एक आदर्श विद्यार्थी बना सकती है, लेकिन नयी तालीम के प्रयोगों को क्या हम व्यावसाय की ओर झुक गये शिक्षा में सफल होने की उम्मीद कर सकते हैं? क्या समाज का एक वर्ग अपने बच्चों को खेत में जाकर या कुम्हारों के पास जाकर उन क्रियाकलापों को करने की अनुमति देगा जिसे नयी तालीम पैटर्न में पढने वाले विद्यार्थी निःसंकोच होकर करते हैं? इस परिस्थिति में इन क्रियाकलापों के जीवन में व्यवहारिक उपयोग की दृष्टि से देखें तो शहरी या निजी विद्यालयों को इसका कुछ भी खास उपयोग नहीं दिखता है।

यह संभव है कि NEP 2020 में प्रस्तावित क्राफ्ट-आधारित शिक्षा या 10-दिन स्थानीय कला का प्रशिक्षण की स्थिति एक तरह से विश्वविद्यालयों/कॉलेजों में पढाये जा रहे पर्यावरण शिक्षा तरह सिर्फ पास भर होने की तरह हो सकती है। गांधी ने विकास और प्रगति की प्रक्रिया को अपने शिक्षा सुझावों के माध्यम से बताने का प्रयास किया है, हालाँकि कोरोना काल में अचानक से ऑनलाइन माध्यम में स्विच हुई शिक्षा से यह आशय साफ़ हो गया है कि एडवांस होना या विकास करने के नाम पर हमेशा पिछड़े या आर्थिक

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

रूप से कमजोर वर्ग पीछे ही रह जाते हैं, जैसे कि अभी जहाँ मेनस्ट्रीम विद्यार्थी अपनी पढाई जारी रखे हैं वहीं ग्रामीण इलाकों में अथवा पिछड़ा वर्ग के पास स्मार्टफ़ोन न होने के कारण शिक्षा की स्थिति नाजुक है।[9,10,11]

फण्ड की कमी, सरकारी अनुदान एवं मान्यता न मिलना तथा पाठ्यपुस्तक आधारित न हो कर अनुभव आधारित शिक्षा का होना जैसे कई कारणों से नयी तालीम आधारित विद्यालय देश में असफल हो गये हैं, लेकिन इनके द्वारा किये जा रहे प्रयोग आज भी अधिगम प्राप्त करने के सर्वोत्तम उपायों में से एक हैं। हमें यह ध्यान रखना होगा कि गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों से सिर्फ अपने काम भर की सामग्री को लेकर अपने शिक्षा नीति में संकलित करने से नहीं होगा। गांधी के शिक्षा संबंधी विचार एक दीर्घकालिक प्रयोग और प्रक्रिया की तरह हैं। शिक्षा के बाजारीकरण के दौर में नई शिक्षा नीति 2020 कोई नई राह नहीं दिखाती है बल्कि यह नीति भी पूरी तरह से सरकार पर आश्रित है कि किन-किन सुझावों को कैसे-कैसे जमीन पर लाया जाये। एक नज़र में देखें तो NEP 2020 में विद्यालयी स्तर पर आर्थिक-सामाजिक बंटवारे को दूर करने की कोई किरण नज़र नहीं आती।

परिणाम

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन: हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को बीसवीं सदी का युगपुरुष भी कहा जाता हैं. उनका जीवन आदर्शों एवं मूल्यों पर पूर्ण रूप से आधारित था. वे प्रयोजनवाद के विचारों से गहरे प्रभावित थे.

दुनिया भर में आज गांधीजी को महान नेता एवं समाज सुधारक के साथ साथ शिक्षा दार्शनिक के रूप में भी जाना जाता हैं. उनका मानना था कि समाज की उन्नति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं.

शिक्षा के प्रति इनकी विशेष सोच थी, जो कालान्तर में गांधीजी के शिक्षा दर्शन के रूप में जानी जाती हैं. वे शिक्षा के माध्यम से शोषण विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे.

जहाँ किसी तरह जाति, वर्ग, लिंग का भेद न हो, सभी समरसता के साथ जी सके. उनका मानना था कि समाज के प्रत्येक सदस्य का शिक्षित होना जरुरी हैं, शिक्षा के बगैर एक आधुनिक समाज का सपना असम्भव ही हैं.

गांधीजी का शिक्षा दर्शन बेहद व्यापक एवं जीवनोपयोगी हैं. उन्होंने शिक्षा के मुख्य सिद्धातों, उद्देश्यों तथा शिक्षा की योजना को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया.

गांधीजी का आधुनिक शिक्षा दर्शन उन्हें समाज में एक शिक्षाशास्त्री का दर्जा दिलवाता हैं. उन्होंने बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह अद्वितीय था.[12,13,15]

भारत में शिक्षा को स्वावलंबी बनाने की दिशा में उन्होंने 3H की अवधारणा प्रस्तुत की, गांधी जी का मानना था कि बच्चों को हार्ट, हैण्ड और हेड (भावात्मक, गत्यात्मक और बौद्धिक) शिक्षण कराया जाना चाहिए. जिसमें ये तीनों अंग सक्रिय हो.

देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण टूल हैं जिसकी मदद से हम देश को स्वालम्बी बना सकते हैं.

गांधीजी ने लम्बे समय तक भारतीय शिक्षा का अध्ययन किया और अंत में इस परिणाम पर पहुचे कि शिक्षा समाज आधारित हो चुकी हैं, जिसमें सरकार की कोई भागीदारी नहीं रही हैं. वे भारतीय शिक्षा को एक सुंदर वृक्ष (ब्यूटीफुल ट्री) की संज्ञा देते थे.

डोक्टर धर्मपाल प्रसिद्ध गांधीवादी शोधकर्ता रहे हैं. जिन्होंने गांधीजी द्वारा भारतीय शिक्षा को लेकर कहे गये द ब्यूटीफुल ट्री को लेकर अपना शोध आरम्भ किया. उन्होंने अंग्रेजी दौर और उससे पूर्व के शिक्षा से जुड़े दस्तावेजों को खंगाला.

वे भारत व ब्रिटेन में भारतीय संग्रहालयो और ग्रंथालयों से ब्रिटिशकालीन शिक्षा से जुड़े स्रोत खोजते रहे. उनके शोध का निष्कर्ष यह था, ब्रिटिश सरकार ने भारत को न केवल औद्योगिक बल्कि साहित्यिक, नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से भी खोखला बना दिया था.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

मेकाले की शिक्षा पद्धति ने गोरी मानसिकता के गुलामों को जन्म दिया, अंग्रेजी शिक्षा के चलते ही यहाँ कुछ घराने भारत के भाग्य निर्माता बन पाए.

महात्मा गांधी का आधारभूत शिक्षा दर्शन सिद्धान्त

गांधीजी ने शिक्षा को अपने शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा कि शिक्षा से मेरा अर्थ मानव या बालक के शरीर, आत्मा और मन मस्तिष्क का चहुमुखी विकास.

वे बालक के शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और मानसिक विकास का आधार शिक्षा को मानते थे. महात्मा गांधी ने शिक्षा दर्शन में शिक्षा के 7 आधारभूत सिद्धांतों का वर्णन किया, जो इस प्रकार से हैं.[17,18,19]

1. 7 से 14 वर्ष की आयु के सभी बालक बालिकाओं को निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा मिले.
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए.
3. साक्षरता और शिक्षा अलग अलग हैं, इन्हें एक न माना जाए
4. शिक्षा का उद्देश्य बालक में मानवीय गुणों का विकास करना हैं.
5. बालक को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे उसके ह्रदय, मन और आत्मा का संतुलित विकास हो सके.
6. शिक्षा में स्थानीय उद्योग को माध्यम बनाया जाए
7. शिक्षा रोजगारपरक हो, पढ़े लिखे बेरोजगार न हो

गांधीजी के शिक्षा दर्शन के उद्देश्य

महात्मा गांधी ने अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों को दो भागों में विभक्त किया हैं. पहला तात्कालिक उद्देश्य एवं दूसरा सर्वोच्च उद्देश्य जो इस प्रकार हैं. जिनकों नियमित शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता हैं.

- रोजगार का साधन: महात्मा गांधी के विचार में शिक्षा ऐसी हो बालक की आर्थिक आवश्यकताओ को पूरा करती हो, बालक शिक्षा के द्वारा आत्मनिर्भर बन सके तथा बेरोजगारी से मुक्त हो.
- सांस्कृतिक लक्ष्य: गांधीजी ने शिक्षा को संस्कृति का आधार माना हैं. बालक की शिक्षा ऐसी हो जो उनको अपनी संस्कृति तथा परम्पराओं व मूल्यों से जोडकर रखे.
- बालक का समग्र विकास: उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करने वाली हो.
- गांधीजी ने नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान वाली शिक्षा पर बल दिया.
- महात्मा गांधी ने शिक्षा का पांचवा उद्देश्य मुक्ति बताया, सभी तरह के बन्धनों से मुक्ति वाली हैं. बालक को आध्यात्मिक स्वतन्त्रता हो. वे सत्य और ईश्वर प्राप्ति को शिक्षा के साथ समायोजित करना चाहते हैं, जिससे मानव अपने सर्वोच्च लक्ष्य को पा सके.

गांधीजी की बेसिक अथवा बुनियादी शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में गांधीजी का बेसिक शिक्षा का फार्मूला एक महानतम देन हैं. उन्होंने बच्चें की बुनियादी शिक्षा कैसी हो उसका स्वरूप क्या हो, इसका सम्पूर्ण मॉडल प्रस्तुत किया था.

उन्होंने 1937 में वर्धा के राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन के दौरान भारत में शिक्षा का यह मॉडल प्रस्तुत किया था. जिसमें दसवीं तक अंग्रेजी मुक्त कुटीर उद्योग आधारित थी.

जाकिर हुसैन समिति द्वारा गांधीजी द्वारा प्रस्तावित स्कूल शिक्षा की योजना तैयार की और 1938 के हरिपुर सम्मेलन में इसे स्वीकृति मिल गई थी. गांधीजी की बुनियादी शिक्षा को वर्धा शिक्षा योजना के नाम से भी जाना जाता हैं.[20,21,22]

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएँ

- बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम 7 वर्ष की अवधि का था.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

- इसमें 7 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की बात कही गई.
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होगी, मगर हिंदी भाषा सभी के लिए अनिवार्य रहेगी.
- बुनियादी शिक्षा का आधार शिल्प था.
- शिल्प शिक्षा के माध्यम से बालकों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य थे.
- शिल्प शिक्षा में सामाजिक एव वैज्ञानिक शिक्षण को महत्व दिया जाए
- शारीरिक श्रम को महत्ता
- यह शिक्षा बालक के परिवेश उनके गाँव और शिल्प उद्योग से घनिष्ठ सम्बन्धित हो
- बालक स्वयं निर्मित उत्पाद का विक्रय कर विद्यालय पर व्यय कर सके
- लड़के तथा लड़कियों के लिए समान पाठ्यक्रम की व्यवस्था
- कक्षा 6 और 7 में पढ़ने वाली बालिकाएं बेसिक शिल्प से गृह विज्ञान ले सकती हैं.
- पाठ्यक्रम का स्तर दसवीं के तुल्य हो
- पाठ्यक्रम में धर्म एवं अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं होगा.

महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों में राष्ट्रीय सभ्यता और संस्कृति का अहम स्थान था. उनकी बुनियादी शिक्षा का प्रारूप भी इन उच्च आदर्शों के साथ बालक के परिवेश से जड़े व्यवसायों से सम्बन्धित था.

उनके मुताबिक़ एक बालक अपने स्थानीय शिल्प में शिक्षा अर्जित कर कुशल कारीगर बनकर अपने जीवन का निर्वाह आसानी से कर सकता हैं. गांधीजी की शिक्षा का जुड़ाव जीवन से था, उसका आधार और उद्देश्य ही जीवन था, इसलिए उन्होंने बुनियादी या आधारभूत शिक्षा का नाम दिया.

इनकी बुनियादी शिक्षा में कृषि, कताई-बुनाई, लकड़ी, चमड़े, मिट्टी का काम, पुस्तक कला, मछली पालन, फल व सब्जी की बागवानी, बालिकाओं हेतु गृहविज्ञान ये समस्त विषय थे, जो हमारे सामाजिक परिवेश से जुड़े हुए हैं.

इनके अतिरिक्त वे बालकों को मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं सामान्य विज्ञान, कला, हिंदी, शारीरिक शिक्षा देने की वकालत करते हैं. गांधी जी के अनुसार शिक्षक द्वारा बालकों को कार्य क्रिया और अनुभव आधारित शिक्षण कराना चाहिए.

गांधीजी के बुनियादी शिक्षा स्वरूप में हस्त शिल्प आधारित शिक्षा पर बल दिया गया. उनके मुताबिक समस्त विषयों को समवाय पद्धति से पढाया जाना चाहिए, जिसमें बालक करके सीखे, अपने अनुभव द्वारा सीखे तथा क्रिया करके सीखे.[23,25,27]

वे व्यावहारिक शिक्षण विधि के पक्षधर थे. उनका मानना था कि सभी विषयों की शिक्षा आधारभूत शिल्प के माध्यम से दी जानी चाहिए.

आज के समय में भी महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन अपनी वर्तमान प्रासंगिकता बनाए हुए हैं. बुनियादी शिक्षा की सही व्याख्या और इसका मूल्यांकन किया जाए तो ये दर्शन न केवल आज उपयोगी हैं, बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था को जीवनउन्मुख बना सकता हैं,

इससे देश पढ़े लिखे युवा बेरोजगार भी नहीं होंगे. भारतीय जीवन को ध्यान में रखते हुए ऐसी पहली शिक्षा योजना का प्रस्ताव रखने वाले गांधीजी ही थी. जिसके क्रियान्वयन से समाज के ढांचागत स्वरूप में गुणात्मक बदलाव किये जा सकते थे.

जीवन में सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को आदर्श मानने वाले गांधीजी आदर्शवाद और प्रयोजनवाद आधारित शिक्षा प्रणाली पर बल देते थे. ये बालक को अपनी रूचि के अनुसार क्रिया करके सीखने की पद्धति के समर्थक थे.

बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार उनको शिक्षा दिलाना चाहते थे, अतः इन्हें प्रकृतिवादी भी कहा जा सकता हैं. उनका शिक्षा दर्शन आदर्शवाद, प्रयोजन वाद और प्रकृतिवाद का समन्वित रूप था.

देश में आजादी के 65 वर्षों के बाद गांधी के शिक्षा दर्शन से प्रेरणा लेकर निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार वर्ष 2009 में प्रदान किया गया, जिसमें 6 से 14 वर्ष के बालकों को अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा देने का प्रावधान किया गया.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

साथ ही बालक बालिकाओं को मातृभाषा में शिक्षा के साथ ही सभी के लिए समान पाठ्यक्रम पर आज भी निरंतर प्रयास किये गये हैं.

महात्मा गांधी के विकास में सभी बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, मगर वह शिक्षा जीवनोपयोगी हो तथा रोजगार पैदा करने वाली हो, आज जब हम अपने देश में बेरोजगारी की स्थिति देखते हैं, तो निश्चय ही शिक्षा व्यवस्था पर सवाल उठेगे. गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा पर जोर दिया जिसमें औद्योगिक प्रशिक्षण भी सम्मिलित था.

इस तरह बच्चा दसवीं तक पढ़ते पढ़ते किसी हस्त कौशल में निपुण बन जाता तथा यह बेरोजगारी की समस्या से मुक्ति दिलाने वाला कारगर उपाय था. वर्तमान में शिक्षा में व्यावसायिकता पर बल उसी बुनियादी शिक्षा की अवधारणा से प्रेरित हैं.[28,29,30]

गांधीजी ने अपने शिक्षा दर्शन में मानवीय मूल्यों आधारित शिक्षा देने की बात की हैं. आज हमारी सामाजिक विकृतियों का मूल कारण शिक्षा में मानवता के शिक्षण की कमी ही हैं. वे क्रिया करके सीखने पर बल देते थे.

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 में भी गांधी के एक तत्व को अपनाया गया हैं. NCF कहता हैं कि बच्चों को करके सीखने के अधिकतम अवसर दिए जाने चाहिए, इससे सीखा हुआ ज्ञान मात्र सैद्धांतिक न होकर स्थायी हो जाता हैं.

उन्होंने परिश्रम को भी शिक्षा में अनिवार्य तत्व माना. मानव को अपना कार्य स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए, इससे वह किसी पर निर्भर नहीं रहेगा.

साथ ही श्रम के आधार पर समाज में उंच नीच भी समाप्त हो जाएगी. आज भी कला शिक्षा जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में अनिवार्य करके बालक में श्रम के प्रति आदर का भाव पैदा किया जा रहा हैं. जिससे वह बेझिझक उत्पादन कार्य से जुड़ सकेगा.

महात्मा गांधी अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षा के माध्यम से सर्वोदय समाज की स्थापना का सपना देखते हैं. उनके सर्वोदय समाज में परिश्रम का सम्मान होगा, धन की बजाय परस्पर सहयोग और स्नेह की भावनाएं होगी, घ्रणा व पृथकता के स्थान पर पर हित के भाव होंगे. लोग संचय की बजाय त्याग पर बल देगे.

आज के समाज में जिस तरह मानवता पैरों तले कुचली जा रही हैं, इससे यह कहा जा सकता हैं कि आज भी गांधी के सर्वोदय समाज की अवधारणा की प्रांसगिकता हैं.

उन्होंने शिक्षा को धर्म से पूरी तरह अलग रखने की बात कही थी. उनका मानना था कि धर्म लोगों में विवाद और झगड़ों को जन्म देता हैं, आज की स्थिति उनकी इस बात का प्रमाण भी देती हैं.

अंत में निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि गांधी का शिक्षा दर्शन भारतीय जीवन पर आधारित था, इसलिए इसका महत्व कल भी था और आज भी हैं. बापू द्वारा बताए गये शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि को आज भी किसी न किसी रूप में हमारी शिक्षा व्यवस्था में अमल में लाया जा रहा हैं.

बेसिक शिक्षा चाहे ग्रामीण क्षेत्र के लिए हो अथवा शहरी क्षेत्र के लिए यह बालक को अपने परिवेश से जोडकर क्रिया आधारित शिक्षा देने पर बल देती हैं. जो बच्चे के मानसिक, शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर विशेष ध्यान देती हैं.

शिक्षा का माध्यम

जैसा कि पूर्व विदित हैं, महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा दर्शन में बच्चे को मातृभाषा में शिक्षा देने की बात प्रमुखता से कही हैं, उनके विचार में अंग्रेजी भाषा शोषण की प्रतीक हैं. उसके स्थान पर बच्चे को मातृभाषा में शिक्षा के साथ ही हिंदी की अनिवार्य रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

विद्यालय का वातावरण बालक के परिवेश से पूरी तरह जुड़ा हो तो उन्हें सीखने में सहजता होगी. ऐसा केवल मातृभाषा के प्रयोग से ही सम्भव हैं. वे शिक्षा में मातृभाषा को कितना महत्व देते थे, उनके एक कथन से इस बात को समझा जा सकता हैं.

“यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा दिया जाना बंद कर देता जो आनाकानी करते उन्हें बर्खास्त कर देता मैं पाठ्य पुस्तकों के तैयार किए जाने का इंतजार न करता।”[30]

निष्कर्ष

Gandhi Jayanti 2022 महात्मा गांधी ने आज से 100 साल पहले ही नई शिक्षा नीति के सिद्धांतों और प्रणाली का सपना देखा था, जिसे आज के समय में पूरा किया जा रहा है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के माध्यम से ही सच, शान्ति और अहिंसा का मार्ग प्रसस्थ किया। महात्मा गांधी ने शिक्षा के साथ साथ पर्यावरण पर भी जोर दिया। नई शिक्षा नीति और पर्यावरण पर महात्मा गांधी के सिद्धांत आज सफल हो रहे हैं। इन्हीं सफलता से भारतीय समाज गतिशील बन रहा है और तकनिकी में रोज नई नई उपलब्धियों को हासिल कर रहा है। आइये जानते हैं महात्मा गांधी द्वारा दिखाया गया नई शिक्षा नीति और पर्यावरण का मार्ग...

हाल के दशकों के बाद, भारत को एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मिली। नई शिक्षा नीति 2020, आधुनिक शैक्षिक विचारधाराओं और विचार प्रक्रिया के कई पहलुओं के अलावा शिक्षा पर गांधीवादी विचारों की याद दिलाती है। गांधीजी एक ऐसे प्रयोगवादी थे, जिन्होंने जीवन भर सत्य का साथ दिया। वह प्राचीन संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित थे। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बहुभाषावाद और भाषा, जीवन कौशल, नैतिकता और मानव संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच, बहुविषयक, समग्र शिक्षा आदि की शक्ति को बढ़ाने की क्षमता है।

गांधी जी ने कहा था कि नई शिक्षा निति से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है। साक्षरता केवल शिक्षा प्रदान करने का साधन नहीं है, शिक्षा अपने आपको को बनाने का साधन है। शिक्षा में गांधीजी ने सबसे पहले व्यक्तिगत चरित्र के गठन पर जोर दिया। गांधी जी ने कहा था कि एक मजबूत चरित्र के बिना कोई भी जीवन के किसी भी क्षेत्र में विशिष्टता हासिल नहीं कर सकता है। चरित्र के निर्माण में व्यवहार, अहिंसा और सत्यता बहुत महत्वपूर्ण घटक होते हैं।[31]

इसलिए नई शिक्षा निति में मातृभाषा भाषा और कौशल पर अधिक जोर दिया गया है। गांधी जी का मानना था कि एक छात्र को पहले उसकी मातृभाषा में पढ़ाया जाना चाहिए और उसके बाद राष्ट्रभाषा का परिचय दिया जाना चाहिए और जब वह रुचि और बुद्धिमत्ता का विकास करता है तो वह अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी सीख सकता है। उनका मानना था कि अंग्रेजी भाषा हमें दूसरों से जोड़ने का काम करती है, जिसपर विवाद नहीं किया जा सकता है।

गांधी जी का मानना था कि स्कूल या कॉलेज में छात्र क्या सीखता है और घर पर क्या अभ्यास करता है, इसके बीच वास्तव में कोई संबंध नहीं है। ये दोनों चीजें पैमाने के विपरीत हैं। इसके बजाय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्र जीवन की लड़ाई को सफलता प्राप्त करे।

एनईपी के माध्यम से छात्रों के लिए व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा पर जोर देना है, ताकि छात्रों के लिए रोजगार को आसान बनाया जा सके। वह जीवन और दुनिया की समस्याओं के बारे में स्पष्ट और आलोचनात्मक तरीके से सोचने में सक्षम होना चाहिए और इसके समाधानों को विकसित करने में सक्षम होना चाहिए।[32,33]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1) भाना, सुरेन्द्र और गुलाम वाहेद.द मेकिंग ऑफ़ अ पोलिटिकल रिफोर्मार : गाँधी इन साऊथ अफ्रीका, १८९३-१९१४. नई दिल्ली: मनोहर, २००५
2) बोंदुरंत्त, जुआअन वी. हिंसा की जीत: गाँधीवादी दर्शन का संघर्ष. प्रिन्सटन यूपी, १९९८ आईएसबीऍन ०-६९१-०२२८१-X
3) चेर्नस, ईरा. अमरीकी अहिंसा: विचारों का इतिहास, सातवाँ अध्याय .आईएसबीऍन १-५७०७५-५४७-७
4) चड्ढा, योगेश .गाँधी: एक जीवन .आईएसबीऍन ०-४७१-३५०६२-१
5) डेलटन, डेनिस (ईडी) .महात्मा गाँधी: चुनिन्दा राजनैतिक लेख .इंडियानापोलिस/कैमब्रिज : हैकट प्रकशन कंपनी (Hackett Publishing Company), १९९६ आईएसबीऍन ०-८७२२०-३३०-१
6) गाँधी, महात्मा .महात्मा गाँधी के संचित लेख .नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सुचना एवम प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९९४.
7) इश्वरण, एकनाथ (Eswaran, Eknath).गाँधी एक मनुष्य .आईएसबीऍन ०-९१५१३२-९६-६

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

8) फिशर, लुईस .द एसेनसियल गांधी : उनके जीवन, कार्यों और विचारों का संग्रह . प्राचीन: न्यूयार्क, २००२. (पुनर्मुद्रित संस्करण), आईएसबीऍन १-४०००-३०५०-१
9) गाँधी, एम.के. गाँधी के पाठक: उनके जीवन और लेखन का एक स्रोत पुस्तक.होमर जैक (ईडी) ग्रोव प्रेस, न्यू योर्क, १९५६
10) गाँधी, राजमोहन .पटेल: एक जीवन .नवजीवन प्रकाशन घर, १९९० आईएसबीऍन ८१-७२२९-१३८-८
11) हंट, जेम्स डी. लन्दन में गाँधी . नई दिल्ली: प्रोमिला एवं कंपनी, प्रकाशक, १९७८
12) मान्न, बर्नहार्ड, महात्मा गाँधी और पाउलो फरेरी के शैक्षणिक अवधारणाएं. क्लौबें, बी, में .(ईडी) राजनैतिक समाजीकरण एव शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन बीडी. ८.हैम्बर्ग १९९६.आईएसबीऍन ३-९२६९५२-९७-०
13) रूहे, पीटर. गाँधी: एक छायाचित्र जीवनी .आईएसबीऍन ०-७१४८-९२७९-३
14) शार्प, जीन. गाँधी एक राजनैतिक नीतिज्ञ के रूप में, अपने मूल्यों और राजनैतिक निबंधो के साथ. बोस्टन: एक्सटेंडिंग होराइज़ोन पुस्तकें, १९७९.
15) सोफ्री, गियान्नी. गाँधी और भारत: केन्द्र में एक सदी (१९९५) आईएसबीएन १-९००६२४-१२-५
16) गौरडन, हैम.आध्यात्मिक साम्राज्यवाद से अस्वीकृति: गाँधी को बूबर के पत्रों की झलकी .'सार्वभौमिक अध्ययन की पत्रिका, २२ जून १९९९.
17) गाँधी, एम.के "दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह"
18) "नई शिक्षा नीति: पढ़ाई, परीक्षा, रिपोर्ट कार्ड सब में होंगे ये बड़े बदलाव". आज तक. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.
19) ↑ "नई शिक्षा नीति पर BJP अध्यक्ष जेपी नड्डा बोले- नई शिक्षा नीति नए भारत की जरूरतों को ध्यान में रखती है". पंजाब केसरी. 29 जुलाई 2020. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.
20) ↑ नई शिक्षा नीति, 2020
21) ↑ "नई शिक्षा नीति-2020: प्रमुख पॉइंट्स एक नजर में". 30 जुलाई 2020. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.
22) ↑ "आइए जानें आखिर देश की शिक्षा प्रणाली को बदलने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की जरूरत क्यों पड़ी". दैनिक जागरण. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.
23) ↑ Rohatgi, Anubha, संपा° (2020-08-07). "Highlights | NEP will play role in reducing gap between research and education in India: PM Modi". Hindustan Times. अभिगमन तिथि 2020-08-08.
24) ↑ "New Education Policy 2020 : 5वीं तक पढ़ाई अब मातृभाषा में, स्नातक तक प्रवेश की एक परीक्षा". अमर उजाला. अभिगमन तिथि 31 जुलाई 2020.
25) ↑ "नई शिक्षा नीति". नवभारत टाइम्स. अभिगमन तिथि 31 जुलाई 2020.
26) ↑ "नई शिक्षा नीति: पढ़ाई, परीक्षा, रिपोर्ट कार्ड सब में होंगे ये बड़े बदलाव". आज तक. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.
27) ↑ "नई शिक्षा नीति 2020 : स्कूल एजुकेशन, बोर्ड एग्जाम, ग्रेजुएशन डिग्री में हुए बड़े बदलाव, जानें 20 खास बातें". हिन्दुस्तान लाइव. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.[मृत कड़ियाँ]
28) ↑ सिंह, प्रोफेसर दिनेश (29 जुलाई 2020). "स्कूली और उच्च शिक्षा की बेड़ियां खोलेगी नई शिक्षा नीति". द क्विंट. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.
29) ↑ "New Education Policy: अब केमिस्ट्री के साथ म्यूजिक, फिजिक्स के साथ फैशन डिजाइनिंग पढ़ सकेंगे छात्र". आज तक. अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020.
30) ↑ "नई शिक्षा नीति से कितनी बदलेगी शिक्षा व्यवस्था? जानिए-क्या कहते हैं जानकार". आज तक. अभिगमन तिथि 31 जुलाई 2020.
31) ↑ "नई शिक्षा नीति का समर्थन कर शशि थरूर बोले- कई लक्ष्य सच्चाई से परे, बजट पर चिंता". आज तक. अभिगमन तिथि 31 जुलाई 2020.
32) ↑ सिंह, सरोज (30 जुलाई 2020). "नई शिक्षा नीति 2020: सिर्फ़ आरएसएस का एजेंडा या आम लोगों की बात भी". बीबीसी हिन्दी. अभिगमन तिथि 31 जुलाई 2020.
33) ↑ NEP 2020: Student, Teacher Bodies Call The New Education Policy 'Anti-democratic'

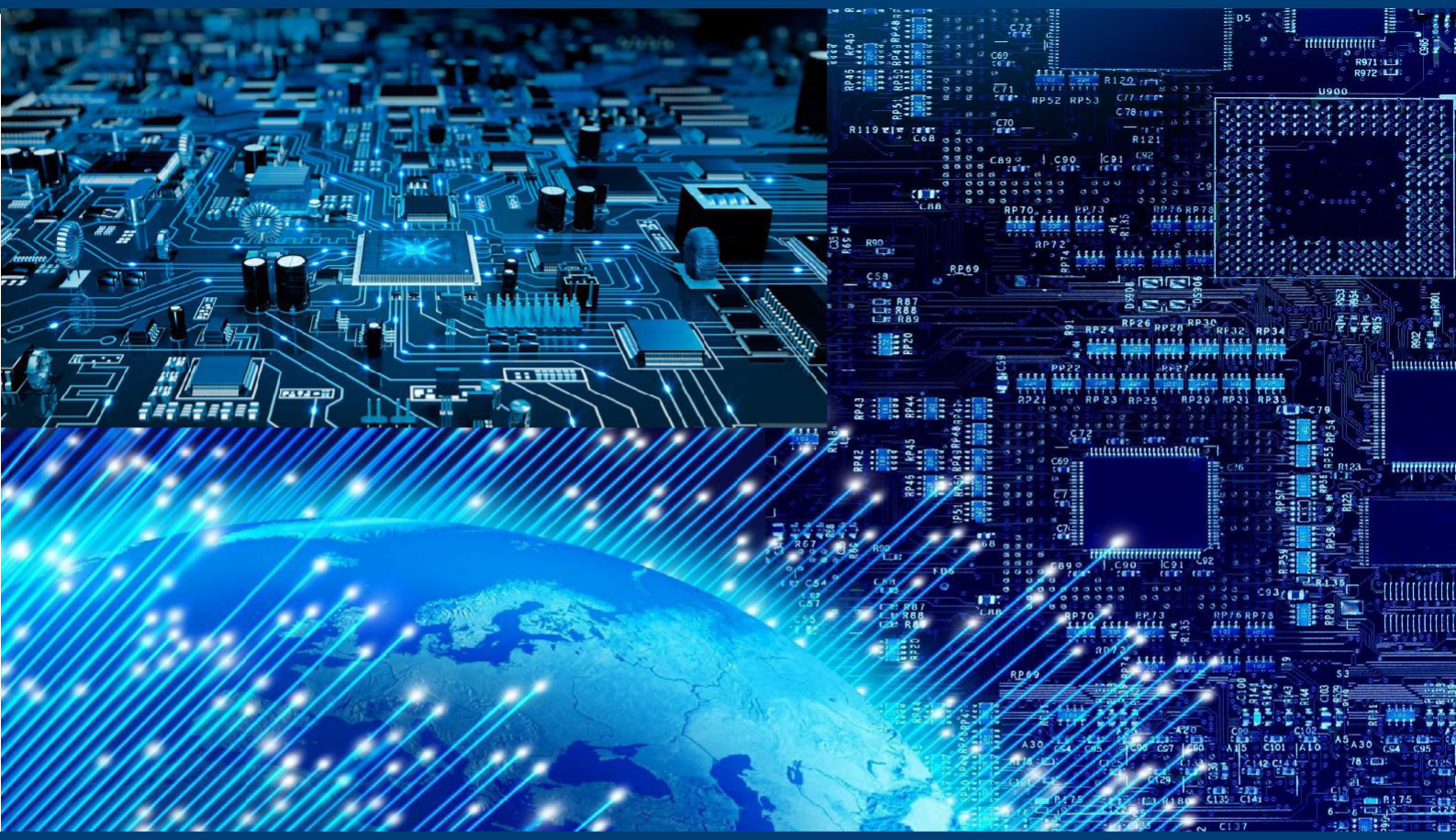

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |